RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-02
February -2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

संग्रहालय विपणन : चुनौतियां तथा समाधान (पुराना किला पुरातत्वीय स्थल संग्रहालय का अध्ययन)

संजू

विद्यार्थी, संग्रहालय विज्ञान विभाग, राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान, जनपथ, नई दिल्ली, भारत

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 20 February 2019

Keywords
संग्रहालय विपणन, पुराना किला स्थल संग्रहालय, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग, संग्रहालय आंदोलन, भारतीय इतिहास

***Corresponding Author**
Email: sanjana103gautam[at]gmail.com

ABSTRACT

आज के आधुनिक समय में विपणन एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। लोगों को अपनी वस्तुओं तथा सुविधाओं की तरफ आकर्षित करने के लिए प्रत्येक क्षेत्र विपणन का प्रयोग करता है। संग्रहालय जैसी जगह को आज न केवल दूसरे संग्रहालयों अपितु मनोरंजन के अन्य माध्यमों जैसे मूवीहॉल, मॉल, वॉटरपार्क तथा रेस्टारेन्ट जैसी जगहों से भी प्रतियोगिता करनी पड़ रही है। इस लेख में यह प्रस्तुत किया गया है कि एक संग्रहालय किस प्रकार विपणन करता है तथा विपणन करते समय उसे किन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। लोग किसी भी विशेष अवसर अथवा अपने अवकाश समय में संग्रहालय की अपेक्षा मनोरंजन के अन्य साधनों का प्रयोग करने में अधिक रूचि रखते है अतः यह जानना अति आवश्यक हो जाता है कि वे क्या कारण है जो दर्शकों को संग्रहालय का चुनाव करने से रोकते हैं? क्या संग्रहालय अन्य साधनों की तरह अपनी सुविधाओं का विपणन नहीं करता। इन प्रश्नों का उत्तर ज्ञात करना अत्यंत आवश्यक है ताकि संग्रहालय का एक उपयुक्त शिक्षण मनोरंजन उत्पाद के रूप में प्रस्तुत किया जा सके।

संग्रहालय विपणन

आज तक संग्रहालय अतीत के ज्ञान को तो संरक्षित कर रहे हैं, लेकिन समाज अतीत में नहीं रह सकता समाज को वर्तमान की आवश्यकता है। प्रत्येक संग्रह समाज द्वारा ही निर्मित है, उस तकनीक का परस्पर संबंध आज नवीन अर्थ में विकसित किया जाए, तो इसके क्रमिक विकास की तकनीक को समझने में सहायता मिल सकती है।

किसी वस्तु की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देकर उसका निर्माण किया जाना। तत्पश्चात् बाजार में उसे विक्रय हेतु प्रस्तुत करना, आज के संदर्भ में व्यवसायिक प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण अंग माना जाता है। इतना ही नहीं उसे विशेष उत्पाद के प्रति रुचि उत्पन्न करना भी एक प्रमुख प्रक्रिया है, आधुनिक शब्दावली में इस प्रक्रिया को ही विपणन कहा जाता है।

अब समय आ गया है, कि संग्रहालयों को भी बाजार में उत्पाद के रूप में विक्रय हेतु प्रस्तुत किया जाए, इस भावना का सीधा का तात्पर्य यही है, कि संग्रहालय भी अन्य शैक्षणिक और मनोरंजन पूर्ण सुविधा प्रदान करने संबंधी सूचनाएँ खुले बाजार में विज्ञापित करें। आज संग्रहालय भी प्रतिस्पर्धा के युग में है, अपने से ही नहीं किंतु मनोरंजन प्राप्त करने वाली उन सभी संस्थाओं से संग्रहालय की प्रतिस्पर्धा है, जहां जनता मनोरंजन हेतु अपना समय व्यतीत करती है। अतः संग्रहालय को अब अपनी गतिविधियों में ज्यादा से ज्यादा लोगों की रुचि जागृत करना चाहिए, इस लक्ष्य की प्राप्ति संग्रहालय, विपणन (मार्केटिंग) द्वारा ही प्राप्त कर सकता है। उत्पादक संस्थान ना होते हुए भी संग्रहालय अपने यहां संग्रहित कलाकृतियो के संबंध में अनुसंधान कर उसे लोगों के समक्ष एक उत्पाद के रूप में प्रस्तुत कर सकता है।

प्रकार

संग्रहालय में विपणन के लिए दो प्रकार के उत्पाद होते हैं, दृश्य और अदृश्य। अदृश्य उत्पाद में वे वस्तुएँ आती हैं, जिनमें किसी प्रकार का स्वामित्व ना हो, उदाहरणार्थ संग्रहालय में आयोजित प्रदर्शनी भ्रमण तथा दृश्य उत्पाद में प्रकाशन, अनुकृति, स्लाइड, वीडियो, कैसेट तथा ऐसी वस्तु है जो संग्रहालय के विक्रय केन्द्र पर बेची जा रही है। अदृश्य वस्तुओं का तात्पर्य सेवा तथा दृश्य वस्तुओं का तात्पर्य वस्तुओं से है। संग्रहालय योजनाबद्ध तरीके से जनहित के उक्त कार्य को हाथों में लेकर एक सुनियोजित प्रचार माध्यम से जनता को अपने द्वारा किए गए कार्यों का उपयोगिता एवं उपादेयता की पूर्ण जानकारी उपलब्ध कराकर तथा जनता को अपने कार्य में सहभागी बना कर ही अपने लक्ष्य की प्राप्ति में सफल हो सकता है।

संग्रहालय आंदोलन

भारत में संग्रहालय आंदोलन का आरंभ 1783 में सर विलियम जोन्स की जज के रूप में नियुक्ति से हुआ। भारतीय इतिहास एवं संस्कृति के प्रति इनकी गहरी अभियचि ने उन्हें एशिया के इतिहास, कला विज्ञान तथा संस्कृति के क्षेत्र में अनुसंधान को लक्ष्य बनाकर 1784 में 'रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल की स्थापना हेतु प्रवृत्त किया।'। 1784–1796 के मध्य सोसायटी से संबंधित विद्वानों द्वारा पुरातत्त्व प्राणिशास्त्र, भू–विज्ञान वनस्पतिशास्त्र, नृशास्त्र आदि से संबंधित संग्रहों को रखने हेतु सोसाइटी द्वारा 1796 में एक संग्रहालय स्थापित किया गया। इसी संग्रहालय की स्थापना के फलस्वरूप 1814 ई. में भारत का प्रथम संग्रहालय 'इंडियन म्युजियम कोलकाता' अस्तित्व में आया।

भारत में लार्ड नथेलियन कर्जन की वायसराय एवं गवर्नर जनरल के रूप में नियुक्ति ने संग्रहालय आंदोलन को नया

RRIJM 2015, All Rights Reserved

आयाम दिया। कर्जन ने ना केवल 'पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग' का पुनर्गढ़न किया अपितु पुरास्थलों की खोज उत्खनन, अभिलेख, विद्या, शोध प्रकाशन तथा प्राचीन स्मारकों के संरक्षण एवं नये संग्रहालय स्थापित भी किये। ऐतिहासिक पुरातात्विक तथा कलात्मक वस्तुओं एवं स्मारकों के संरक्षण तथा संग्रहण हेतु 1904 में उन्होंने प्राचीन स्मारक संरक्षण अधिनियम भी लागू किया। कर्जन के पश्चात् जॉन मॉर्शन की पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के महानिदेशक के रूप में नियुक्ति ने पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग तथा पुरातत्वीय संग्रहालयों के मध्य अच्छा तालमेल स्थापित किया जिसके परिणामस्वरूप भारत में पुरातत्वीय संग्रहों तथा संग्रहालय का विकास हुआ।

संग्रहालय आंदोलन के इस चरण में पुरावशेषों के मिलने के स्थान पर ही संग्रहालय स्थापित किए गए। जिसे स्थल संग्रहालय का नाम दिया गया। इनमें सारनाथ (1904)

लालकिला (1909) खजुराहों (1910) नालन्दा (1915), सांची (1919), मोहनजोदड़ो (1924–25) हड़प्पा (1926–27) तथा तक्षशिला (1928) में प्रमुख हैं।

पुराना किला संग्रहालय

पुराना किला पुरातत्वीय स्थल संग्रहालय किले के अंदर तथा मुख्य प्रवेश गेट के दाहिनी ओर स्थित है। पुराना किला संग्रहालय उत्खनन से प्राप्त सामग्री पर आधारित है, इन उत्खननों से इस स्थान लगभग 1000 ईस्वी पूर्वी के प्राचीनतम उपनिवेशों के साक्ष्य, मिलते है, जो चित्रित मिट्टी के बर्तनों, मौर्य, शुंग, कुषाण, गुप्त, राजपूत तथा सल्तनत काल से होते हुए मुगल काल तक चले आ रहे सांस्कृतिक क्रम को परिलक्षित करते है। पुराना किला स्थल संग्रहालय में लगभग 387 वस्तुएँ प्रदर्शित की गई है। जो दिल्ली की दास्तान बयान करती है। किले के संग्रहालय में प्रदर्शित की गई वस्तु मृदभाण्ड, लघु मूर्तियाँ, टाइलें, मुगल कालीन चीनी मिट्टी के बर्तन आदि दिल्ली तथा उसके आस पास के क्षेत्रों से उत्खनन द्वारा एकत्रित किये गये है। पुराना किला एक ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक धरोहर है। यह भारतीय इतिहास को प्रदर्शित करता है। पुराना किला संग्रहालय भारत के इंद्रप्रस्थ शहर से लेकर मुगल काल तक के इतिहास का साक्षी है।

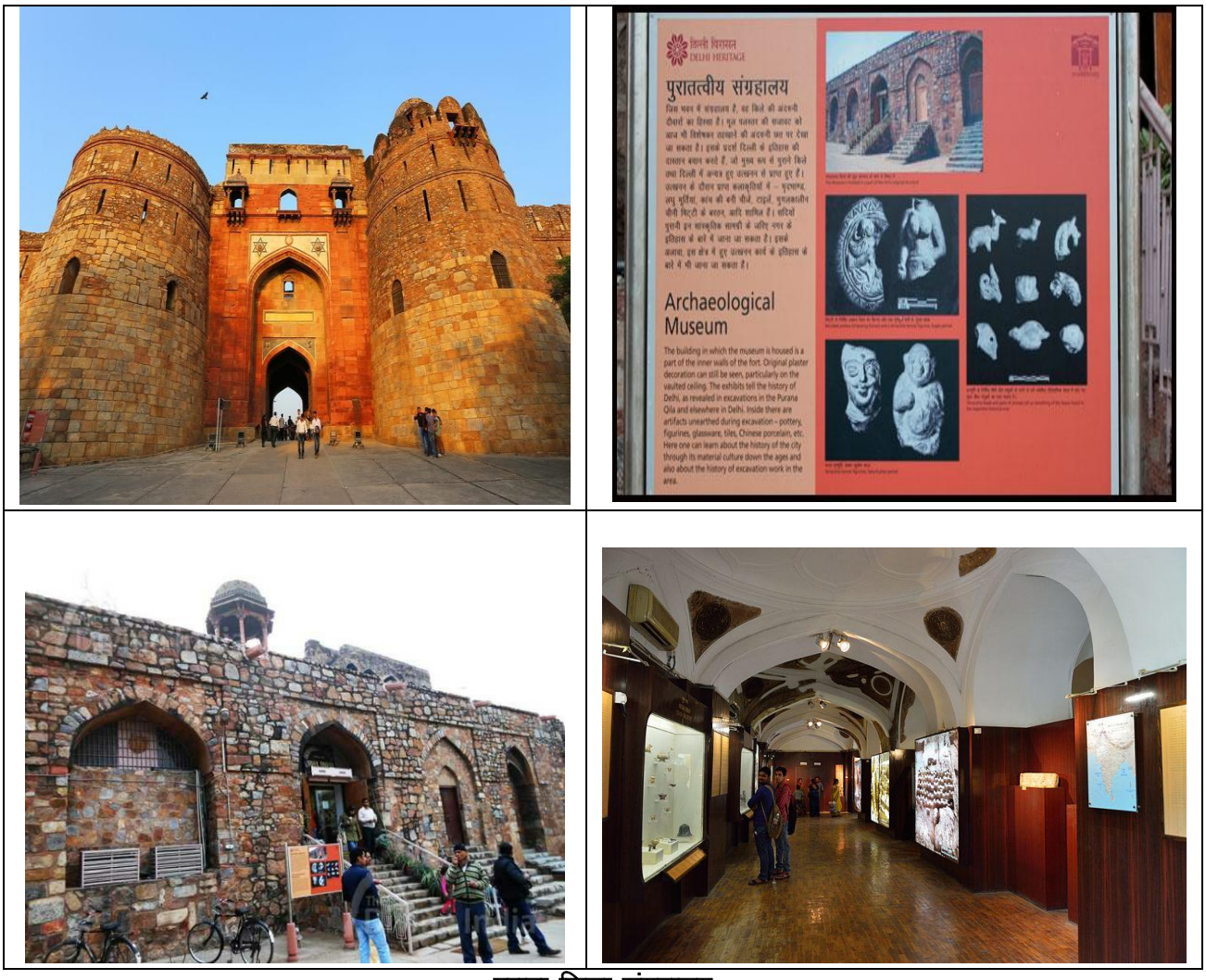

पुराना किला संग्रहालय

पुराना किला संग्रहालय की प्रमुख विपणन चुनौतियाँ है–

1. संग्रहालय में दर्शकों के लिए मूलभूत सुविधाएँ क्लॉक रूम, बैठने की सुविधा, विक्लांग लोगों के लिए ब्रेल लिपि, पहिरदार कुर्सी और रैंप, कैंटीन, संग्रहालय शॉप तथा गाइड टूर आदि उपलब्ध नहीं है।
2. संग्रहालय में संचालित पर्यटन उपलब्ध नहीं है जो आगंतुको को जानकारी दे सके। जानकारी प्राप्त बेंच या टिकट खिडकी की बात की जाये तो वहाँ दर्शकों को संग्रहायल से जुड़ी जानकारी नहीं दी जाती 'कि संग्रहालय की टिकट स्मारक की टिकट के साथ ही ली जाती है' इससे दर्शकों को परेशानी का सामना करना पड़ता हैं इस वजह से कई दर्शक बिना संग्रहालय देखे ही चले जाते हैं, इसका प्रमुख कारण वहां प्रशिक्षित कर्मचारी उपलब्ध न होना भी है जो दर्शकों को पूर्ण जानकारी उपलब्ध कराएँ।
3. संग्रहालय के बाहर चिड़ियाघर है जिससे अधिकांश लोग अपना समय वही व्यतीत करते है।
4. संग्रहालय का अपना कोई विपणन विभाग नही है। संग्रहालय की जानकारी पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग की सरकारी वेबसाईट से ली जा सकती है। जिसमें हर स्थल संग्रहालयों की गतिविधियों की जानकारी होती है।
5. पुराना किला संग्रहालय में प्रसाधन की सुविधा है। लेकिन यह सुलभ इंटरनेशनल संस्था के अंतर्गत आता है। जिनका शुल्क लगता है। शौचालय की बात की जाये तो यह ज्यादा साफ–सुथरा नहीं है जिस कारण दर्शकों को परेशानी होती है।

समाधान –

1. स्थल संग्रहालय की विश्व के अन्य स्थल संग्रहालय की तरह अपनी वेबसाइट होनी चाहिए, जिस पर वे अपने संग्रहालय के संग्रह तथा अन्य जानकारियों के बारे में बता सके।
2. अन्य पुरातात्विक संग्रहालयों की तरह यहाँ भी कई ऐसी गतिविधियाँ होनी चाहिए जैसे वर्कशॉप, लेक्चर, इंटरैक्टिव कार्यक्रम, तथा प्रशिक्षण आदि जिससे अधिक से अधिक लोग संग्रहालय से जुड़े।

पुरातात्विक संग्रहालय में गतिविधियाँ

3. स्थल संग्रहालय की जनसुविधाएँ अच्छी होनी चाहिए जिससे भ्रमण के लिए आए दर्शकों को किसी परेशानी का सामना ना करना पड़े तथा उनका संग्रहालय भ्रमण आनन्दायक रहे।
4. संग्रहालय दुकान भी दर्शकों को आकर्षित करने का एक महत्पूर्ण साधन है। दर्शक जब भी कही भ्रमण के लिए जाता है तो याद के रूप में वहाँ से कुछ अवश्य लाते है, जो अन्य लोगों को वहां जाने के लिए प्रेरित

RRIJM 2015, All Rights Reserved

करती है इसलिए संग्रहालय दुकान, संग्रहालय विपणन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस दुकान में संग्रहालय अपने संग्रह की वस्तुओं की प्रतिलिपि, प्रदर्शनी, सूची पत्र तथा शिक्षा संबंधित सामान रख सकता है।

5. स्थल संग्रहालय के संग्रह संबंधित जानकारी लोगों को देने के लिए **'ऑब्जेक्ट ऑफ दि मन्थ'** प्रदर्शित करना चाहिए, तथा इसकी सूचना सोशल मीडिया, अखबार आदि में दी जानी चाहिए, जिससे दर्शकों में इसे देखने के प्रति उत्सुकता तथा जिज्ञासा उत्पन्न होगी।
6. संग्रहालय से संबंधित गतिविधियों जैसे वर्कशॉप, प्रदर्शनी आदि की प्रेस विज्ञप्ति करनी चाहिए और इसे केवल एक भाषा में नहीं अपितु जनसामान्य की स्थानीय भाषा में भी करना चाहिए। **उदाहरणार्थ** भारत के स्थानीय संग्रहालय की बात की जाये तो सारनाथ तथा कन्नौज के स्थल संग्रहालय अपनी गतिविधियों की जानकारी को आम जनता तक पहुचाने के लिए सोशल मीडिया तथा अखबार में उसकी प्रेस विज्ञप्ति जारी करते है, पुराना किला स्थल संग्रहालय भी इन तरीकों का उपयोग कर सकता है।
7. संग्रहालय को हफ्ते में एक दिन, रात में खोला भी अच्छा कदम है। उस दिन संग्रहालय की टिकट फ्री रखनी चाहिए। पुराना किला रात में 'लाइट एण्ड साउण्ड' शो का आयोजन करता है जिसके लिए दर्शक दूर–दूर से आते है। रात को संग्रहालय खोलने से दर्शक उसका भी आनन्द उठा सकते है।

'लाइट एण्ड साउण्ड' शो

सरकार द्वारा नवीनीकरण कार्य –

सरकार द्वारा पुराना किला को अधिक आकर्षक केन्द्र बनाने के लिए पुराना किला तथा पुराना किला परिसर में नवीनीकरण का कार्य किया गया। पुराना किला परिसर के पास उपस्थित नौका विहार झील को हाल ही में परिखा क्षेत्र में परिवर्तित कर दिया गया। अब यह झील में फव्वारों और लाइटिंग का शानदान संयोग देखने को मिलेगा। झील को परिवर्ति करने का कार्य पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग तथा नेशनल बिल्डिंग्स कन्स्ट्रक्शन कॉपोरेशन (एनवीसीसी) द्वारा किया गया। अब इस झील के चारों ओर के क्षेत्र को पक्का करके पर्यटकों के घूमने केलिए पैदल पथ बनाया गया तथा पर्यटकों के बैठने के लिए जगह–जगह बेंच लगाई गई है। झील के चारों ओर ऊंची रेलिंग भी लगाई गई है। झील और इसके आस–पास के इलाके को इस तरह विकसित किया गया है, जिससे लोग आकर्षित होंगे झील के साथ–साथ पुराना किला टिकट काउंटर को भी सुंदर बनाया गया। पहले की अपेक्षा अब काउंटर को कवर किया गया ताकि दर्शकों को धूप व बारिश में परेशानी का सामना न करना पड़ा। अब टिकट काउंटर के अलावा ऑनलाइन टिकट बुक करने की सुविधा भी http://asi.payumoney.com पर उपलब्ध है, ताकि दर्शकों को लंबी लाइनों में खड़े होने की परेशानी न हो तथा वे अपनी सुविधा अनुसार टिकट बुक कर लें। झील व टिकट काउंटर के कायाकल्प के साथ ही पुराने किले के अंदर व बाहर कई इमारतों में लाइटिंग सिस्टम का उद्घाटन किया गया। किले का मेन गेट, बाहरी दीवार, किला–ए–कुहाना जैसी इमारतें अब रात में रोशनी से जगमगायेंगी।

संस्कृति मंत्री डॉ. हमेश शर्मा के अनुसार पुराना किला में पुनरुद्धार का कार्य किले को टूरिस्ट फ्रेंडली बनाने के लिए किया गया इससे आने वाले दिनों में पुराना किला में पर्यटकों की संख्या बढे.गी।

पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग की मुख्य निर्देशक उषा शर्मा के अनुसार पुराना किला में रोशनी के पश्चात् पुरातन संग्रहालय तथा उत्खनन स्थल, का उद्घाटन भी जल्दी किया गया जायेगा। इसके साथ पब्लिकेशन काउंटर (पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग पब्लिकेशन), पार्किंग सुविधा, गिफ्ट शॉप, तथा उद्यान का नवीनीकरण भी इसमें शामिल है जो दर्शकों के लिए सुविधाजनक होगा।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

परन्तु पुराना किला के पुनरुद्धार कार्य के बाद अब यहां घूमना थोड़ा महंगा हो गया है। जहां पहले किला घूमने के लिए 5 रुपये देने होते थे वहां अब पर्यटकों को 30 रूपये देने होंगे इसके अलावा परिखा क्षेत्र में घूमने का 20 रुपये का टिकट अलग से होगा।

पुराना किला संग्रहालय एक महत्वपूर्ण स्थान है। परन्तु उचित विपणन रणनीति न होने के कारण आम जनता तक इसकी पहुंच काफी कम है। पुराना किला संग्रहालय को आम जनता में अपनी जागरूकता फैलने के लिए विभिन्न कार्यक्रम का आयोजन तथा उनका अधिक से अधिक प्रचार प्रसार करने की आवश्यकता है ताकि लोगों का ध्यान उसकी तरफ आकर्षित हो और वे उसमें अपनी भागीदारी बढ़ाये। इसके साथ–साथ जनता अन्य मनोरंजन के साधनों की तरह संग्रहालय को भी अपना समय व्यतीत करने का एक अच्छा व सुविधाजनक स्थान समझे।

संदर्भ –

1. Anil Goel.(1998): Museum and Collection of Delhi, Harman Publishing House, New Delhi, 3
2. संजय जैन, म्यूजियम एवं म्यूजियोलॉजी एक परिचय, कनिका प्रकाश, बढ़ौदा, 2007, पृ.48
3. Archaeological Survey of India http://www.asi.nic.in/sitemuseum/2016 (accessed on 21st December, 2018.
4. Neil G, Kotler Philip Kotler and Wendy I Kotler.(2016): Museum Strategy and Marketing: Designing Mission, Brinding Audiences, Generating Revenue and Resources, John Wiley & sons
5. M.L.Nigam.(1985):Fundamentals of Meseology, Dev Publications, Hyderabad

RRIJM 2015, All Rights Reserved